ने विश्व के सभी क्षेत्रों पर अपने उपनिवेश स्थापित कर लिये थे, फलस्वरूप औपनिवेशिक संस्कृति की उत्पत्ति हुई जो धीरे-धीरे फलते-फूलते विश्व में छा गई। इस संस्कृति के आगमन से क्षेत्र विशेष की मूल/संस्कृति का ह्रास होने लगा।

3.3 आधुनिक संस्कृति (Modern Culture)

औद्योगिक क्रांति के पश्चात् विभिन्न प्रदेशों के लोगों का एक-दूसरे के सम्पर्क में आने से एकाकी संस्कृति के बदले महाद्वीपीय संस्कृति का विनाश हुआ। औद्योगिक क्रांति ने लोगों में नई उत्साह की प्रवृत्ति ला दी जिससे कई नए आविष्कार एवं खोजें हुई। औद्योगिक क्रांति ने धीरे-धीरे औपनिवेशिक संस्कृति से मुक्त कराया। शिक्षा का प्रसार हुआ सामाजिक चिंतन में वैज्ञानिकता का विकास हुआ। लोगों के खान-पान, रहन-सहन, वेश-भूषा इत्यादि में परिवर्तन हुए। आधुनिक संस्कृति में मानव को प्रगतिशील बना दिया है। आधुनिक संस्कृति में मानव को प्रगतिशील बना दिया है। वर्तमान समय में नित नये-नये उपकरणों का अविष्कार एवं निर्माण हो रहा है। कम्प्यूटर, मोबाइल, इंटरनेट जैसे जटिल यंत्रों को आविष्कार एक बहुत बड़ी सांस्कृतिक उपलब्धि है। मंगल एवं चाँद पर मानव की पहुँच, चाँद पर पानी की खोज मानव संस्कृति की उच्च उपलब्धि है। परन्तु यह विकास की गाथा विश्व के सभी क्षेत्रों के लिए एक जैसी लागू नहीं होती। आज भी विश्व के कई क्षेत्रों में कई जनजाति पाषाणयुगीन अवस्था में है। वास्तव में भिन्न-भिन्न पर्यावरणीय परिस्थितियों ने मनुष्य को भिन्न क्रिया-कलापों की प्रेरणा दी और भिन्न सांस्कृतिक क्रिया-कलाप पर्यावरण में सामंजस्य बनाने के दौरान विकसित हुए। प्रत्येक पर्यावरणीय परिस्थिति की अपनी-अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान है।

वर्तमान समय में जिस प्रकार से सांस्कृतिक प्रसार हो रहा है, उसे देखकर यह कहा जा सकता है कि मानव सम्पर्क की सुलभता के कारण ये सांस्कृतिक अंतर न्यूनतम हो जायेंगे और मानवीय संस्कृति दिन-व-दिन प्रगतिशील होती रहेंगी।

3.4 निष्कर्ष (Summing-up)

उपर्युक्त तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि मानव के सांस्कृतिक उद्विकास की कहानी मानव विकास के साथ जुड़ी है। संस्कृति परिवर्तनशील होती है। यह पुश्त-दर-पुश्त हस्तांतरित होती रहती है। वर्तमान समय में हम जिस संस्कृति को देख रहे हैं वह कई चरणों से होकर गुजरी एवं परिष्कृत है। अध्ययन की सुविधानुसार इस सोपान को मुख्यत: तीन भागों में बाँटा जाता है। प्राचीन मध्य एवं आधुनिक संस्कृति। संस्कृति का विकास प्रतिदिन नये-नये अध्यायों को जोड़ता जा रहा है। नित नये-नये अविष्कार एवं खोज इसका प्रमाण है। चाँद की सतह पर पानी की खोज उच्च संस्कृति उपलब्धि ही है। परन्तु विडंबना यह है कि संस्कृति की यह उपलब्धि विश्व के सभी क्षेत्रों में एक जैसी नहीं है। विश्व के कई क्षेत्रों में जनजातियाँ आज भी आदिम सभ्यता में जी रहे हैं।

भिन्न-भिन्न पर्यावरणीय परिस्थितियाँ भिन्न-भिन्न सांस्कृतिक पहलुओं को जन्म देती है। वर्तमान समय में सांस्कृतिक संप्रेषण को देखकर यह कहा जा सकता है कि विश्व में सांस्कृतिक अंतर न्यूनतम हो जायेंगे एवं दिन-व-दिन मानवीय संस्कृति प्रगतिशील एवं उन्नतशील होती रहेंगी।

3.5 व्यवहृत शब्दावली (Key Words Used)

* संस्कृति :- मानव व्यवहार रूप रंग, वेश-भूषा, खान-पान, रहन-सहन, साहित्य गुण धर्म सभी को संयुक्त रूप से संस्कृति ही कहा जाता है।

* पुरातत्त्व विज्ञान :- विज्ञान की वह शाखा जिसमें पुरातत्त्व संबंधी गुफा, भवन अवशेष, आभूषण, मुद्रा, मृदभांड स्मारक इत्यादि तथ्यों का अध्ययन किया जाता है। इसके सहारे हम अपने अतीत को जान पाते हैं।

3.6 अभ्यासार्थ प्रश्न (Questions for Exercise)

1. मानव के सांस्कृतिक उद्विकास की कहानी को स्पष्ट करें।
2. आधुनिक संस्कृति विभिन्न सोपानों से होकर गुजरी है इस तथ्य को स्पष्ट करें।

3.7 प्रस्तावित पाठ (Suggested Reading)

1. गायत्री प्रसाद : सांस्कृतिक भूगोल
2. जे० एन० दीक्षित : सांस्कृतिक भूगोल
3. बी० एन० सिंह : मानव भूगोल
4. माजिद हुसैन : मानव भूगोल
5. डा० वी० के० वी० श्रीवास्तव एवं डा० वी० वी० राव - मानव भूगोल
6. L.R Singh : Fundamentals of Human Geography
7. P. Honge : Human Geography

●●●

विश्व के सांस्कृतिक परिमण्डल
(Cultural Realms of the World)

पाठ-संरचना (Lesson Structure)

4.0 उद्देश्य (Objective)

4.1 परिचय (Introduction)

4.2 विश्व के सांस्कृतिक हृदयस्थल (Cultural Healths of the World)

4.3 विश्व के सांस्कृतिक परिमण्डल (Cultural Realms of the World)

4.4 निष्कर्ष (Summing up)

4.5 व्यवहृत शब्दावली (Key Words Used)

4.6 अभ्यासार्थ प्रश्न (Questions for Exercise)

4.7 प्रस्तावित पाठ (Suggested Reading)

4.0 उद्देश्य (Objective)

इस पाठ का उद्देश्य छात्रों को विश्व के सांस्कृतिक परिमण्डल के बारे में जानकारी देनी है। इस अध्ययन के पश्चात आप जान सकेंगे :-

विश्व के संस्कृति विकास को,

विश्व के प्राचीन सांस्कृतिक हृदयस्थल को,

विभिन्न चरणों की सांस्कृतिक परिमण्डल को एवं इनकी प्रमुख विशेषताओं को।

4.1 परिचय (Introduction)

मानवीय संस्कृति का विकास मनुष्य की उत्पति एवं क्रमशः विकास से ही जुड़ा हुआ है। मानवीय संस्कृति की उत्पत्ति एवं विकास से संबंधित तथ्यों की चर्चा पूर्व अध्याय में की जा चुकी है।

सांस्कृतिक परिमण्डल का तात्पर्य उस भौगोलिक प्रदेश से है जिसकी सीमा के अन्तर्गत रहने वाले लोग सांस्कृतिक जीवन अर्थात अपनी जीवन शैली से एक-दूसरे से अंतसंबंधित है। सामान्य शब्दों में कहा जा सकता है कि संस्कृति प्रदेश समान कार्यिक जीवनशैली की सामूहिक अभिव्यक्ति है।

नव-पाषाण युग में कुछ मानव समुदाय ऐसे क्षेत्रों में स्थायित्व प्राप्त करने में सफल हुए जहाँ अनुकूलतम भौतिक परिवेश था। इन क्षेत्रों में उपजाऊ सतह जल यातायात सुरक्षा एवं आखेट की सुविधा थी। इन क्षेत्रों में बसने वाली प्रजातियों ने पशुओं की सहायता से कृषि कार्य को आगे बढ़ाया। धीरे-धीरे

इन क्षेत्रों में अधिवास उपकरणों के नये-नये आयाम विकसित होते गये। नई प्रविधि की खोज ने सफलता का द्वार खोल दिया जिसके कारण मानव समुदाय में नया उत्साह जाग्रत हुआ। ऐसे क्षेत्रों की महत्ता बढ़ जाने से समीपवर्ती क्षेत्रों के लोग भी आकृष्ट हुए, जिससे जनसंख्या में वृद्धि होती गई। यहाँ क्रमशः जीवन की सुविधाएँ आसान होती गई जिससे मानव अनेक दिशाओं में अपने कार्य-कलापों को विकसित करने में सफल हो सका। इन सम्पूर्ण परिस्थितियों ने मानवीय संस्कृति को विकसित होने का अवसर दिया, फलस्वरूप कुछ क्षेत्र मानव संस्कृति के हृदयस्थल बन गये।

4.2 विश्व के सांस्कृतिक हृदयस्थल (Cultural Heartlands of the World)

विश्व के चार सांस्कृतिक हृदयस्थल चार नदी घाटियों में विकसित हुए।

विश्व के प्रमुख प्राचीन सांस्कृतिक हृदयस्थल :-

सिंधु घाटी

दजला फरात

नील घाटी

हवांदष्टो घाटी ! (चित्र संख्या - 4.1)

सिंधु घाटी का सभ्यता सिंधु नदी से लेकर गंगा घाटी तक विस्तृत थी। समतल उपजाऊ भूमि, अपार जल स्रोत, प्रचुर प्राकृतिक वनस्पति, नवीन जलोढ़ का जमाव, प्राकृतिक तटबन्ध यहाँ की विशेषता थी।

यहाँ कृषि, व्यापार, वस्तु-निर्माण, वस्तुकला, शिल्प और अनेक मानवीय क्रियाकलापों का विकास हुआ। हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ों के नगर सदृश्य अधिवास सांस्कृतिक विकास के प्रतीक माने जाते हैं। ऐसे अधिवास विस्तृत भू-क्षेत्र पर विकसित हुए और यह हृदयस्थल एक महान सांस्कृतिक प्रकाश स्तम्भ बन गये।

2. दजला फरात की घाटी में मेसोपोटामिया का हृदयस्थल :-

भूमध्यसागरीय क्षेत्र तुर्की, ईरान, फारस की खाड़ी जैसे क्षेत्रों के बीच एक अत्यन्त उपजाऊ अर्द्धचन्द्राकार क्षेत्र बनता है।

मेसोपोटामिया संस्कृति की स्थिति ऐसी थी कि अनेक संस्कृतियों से उनका सम्पर्क स्थापित हुआ। आने वाले व्यापारियों की सामाजिक संरचना एवं तकनीकी ज्ञान ने इस क्षेत्र को ऐसा वैशिस्टय प्रदान किया, जो अनेक आक्रमणों के बाद भी सुरक्षित रहा। नई मानव-सभ्यता एवं संगठन का सतत विकास होता रहा।

3. नील घाटी का सांस्कृतिक हृदयस्थल :-

नील नदी की निचली घाटी जो मिस्र में स्थित है अपनी उपजाऊ भूमि प्रचुर जलराशि और पर्याप्त वनस्पति के आवरण के कारण एक महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक हृदयस्थल बन गई। इसके डेल्टाई भागों में मानव-सभ्यता का विकास हुआ। यहाँ कृषि, व्यापार, राजनीति धर्म एवं विविध कलाओं का विकास हुआ। नील नदी घाटी में अनेक सांस्कृतिक भूदृश्य मानवीय प्रयोगों से विकसित हुए। मिस्र के पिरामिड एवं शव-सुरक्षा का रहस्य आज भी अलौकिक है।

4. हवांगहो घाटी का सांस्कृतिक हृदयस्थल :-

इस नदी घाटी में आदि मानव का निवास रहा है। पूर्ण पाषाण युग एवं पाषाण युग से ही यहाँ मानव का निवास रहा है। ग्रामों की स्थापना, कृषि-कार्य आर पशुपालन यहाँ बहुत पहले से ही विकसित था। वस्तु-निर्माण, उद्योग, वास्तुकला, ललितकला इत्यादि का भी विकास यहाँ हुआ।

यहाँ ताँबा, लोहा आदि धातुओं का प्रयोग, खेतों में पशु शक्ति का प्रयोग, सिंचाई के साधनों का विकास, सामाजिक संगठन, सुरक्षा एवं राजनीति का विकास यहाँ के प्रमुख सांस्कृतिक धरोहर थे।

4.3 विश्व के सांस्कृतिक परिमण्डल (Cultural Realms of the World)

विश्व को सांस्कृतिक परिमण्डल ने वर्गीकृत करने का प्रयास कई भूगोलवेत्ता, मानवशास्त्रियों, इतिहासकारों द्वारा किया गया है। इस सन्दर्भ में भूगोलवेत्ता ब्रौक, मानवशास्त्री गोल्डस एवं इतिहासकार टोयन्बी के कार्यों को ही व्यापक मान्यता मिल पाई है।

ब्रौक ने बहुचर समरूपता के आधार पर गोल्डस ने ''वंशानुगत गुणों'' के आधार पर एवं टोयन्बी ने ''ऐतिहासिक समरूपता'' के आधार पर विश्व के सांस्कृतिक प्रदेशों को विभाजित किया है।

प्रमुख भूगोलवेत्ता ब्रौक ने वर्गीकरण का प्रथम आधार धर्म को माना है। उनके अनुसार धर्म भौगोलिक कारक नहीं है, परन्तु सामान्य भौगोलिक परिस्थितियों के प्रदेश में किसी एक धार्मिक विश्वास की बहुलता होती है। ब्रौक के अनुसार सांस्कृतिक प्रादेशीकरण के प्रमुख आधार -

- धर्म
- प्रजातीय गुण
- भाषायी वितरण
- कार्यिक संरचना
- लोक-संस्कृति
- रहन-सहन एवं खान-पानकी आदत
- वेशभूषा
- सामाजिक मान्यताएँ

उपर्युक्त कारकों के आधार पर ब्रोक महोदय ने विश्व को चार वृहत और दो लघु सांस्कृतिक प्रदेशों में विभजित किया है। ये प्रदेश इस प्रकार हैं।

(1) इसाई प्रधान सांस्कृतिक प्रदेश (पश्चिमी सांस्कृतिक प्रदेश)

(2) इस्लाम प्रधान सांस्कृतिक प्रदेश

(3) इण्डिक सांस्कृतिक प्रदेश

(4) बौद्ध-धर्म सांस्कृतिक प्रदेश (चित्र संख्या-4.2)

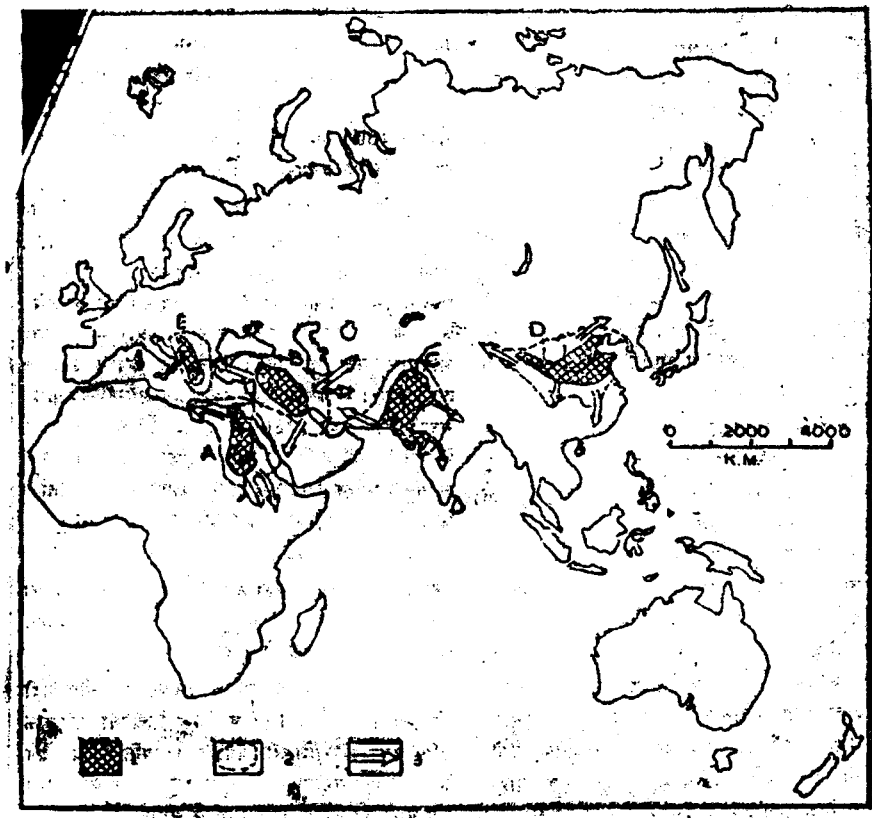

चित्र 4.1 , विश्व के प्राचीन सांस्कृतिक हृदयस्थल (Ancient Cultural Healths) 1. हृदयस्थल
2. परिमंडल 3. प्रसरण प्रवाह, A–नील घाटी, B–दजला-फरात घाटी, C–सिन्धु घाटी, D–हवांगहो घाटी

लघु सांस्कृतिक प्रदेश–

(1) द० पूर्वी एशियाई सांस्कृतिक प्रदेश (धार्मिक मिश्रण का)

(2) मेसो अफ्रीकी सांस्कृतिक प्रदेश (जनजातीय)

(1) ईसाई प्रधान सांस्कृतिक प्रदेश:-इस प्रदेश के अन्तर्गत वे क्षेत्र आते हैं जहाँ रहने वाले अधिकतर लोग इसाई धर्म में विश्वास रखते हैं तथा उनके धार्मिक विश्वास नियमों के अनुरूप खान-पान, रहन-सहन एवं जीवनशैली विकसित होते हैं। इस धर्म का प्रभाव विश्व के वृहत् भौगोलिक प्रदेश में है। इस प्रदेश को पुन: सात उपप्रदेशों में बाँटा गया है-प० यूरोपीय, पूर्वी यूरोप, द० यूरोप, आंग्ल अमेरिका, आस्ट्रेलिया एवं न्यूजीलैण्ड, केप प्रान्त एवं पूर्वी अफ्रीका उच्च भूमि। इसे पश्चिमी सांस्कृतिक प्रदेश भी कहते हैं।

(2) इस्लाम प्रधान सांस्कृतिक प्रदेश:-इस धर्म का सांस्कृतिक प्रभाव मुख्यत: मध्य-पूर्व मरूस्थलीय तथा अर्द्ध मरूस्थलीय भौगोलिक प्रदेश में है, जिसका विस्तार सहारा मरूस्थल से लेकर मध्य एशियाई मरूस्थल तथा पूर्व में ब्लूचिस्तान के पठार से लेकर पश्चिम में एशिया माइनर तक है।

यह एक ऐसा सांस्कृतिक प्रदेश है, जिसकी जीवनशैली पर प्रादेशिक वातावरण का अभूतपूर्व प्रभाव है। इस धर्म ने न सिर्फ जीवन शैली एवं मान्यताओं को विकसित किया वरन् इसका प्रभाव खगोलशास्त्र, गणित, मानव-विज्ञान, साहित्य, दर्शन और मानचित्र कला जैसे विषयों के विकास पर भी पड़ा है।

(3) इण्डिक सांस्कृतिक प्रदेश :-इण्डिक सांस्कृतिक प्रदेश दक्षिण एशियाई औद्योगिक प्रदेश है। यद्यपि यह हिन्दू धर्म प्रधान देश है, लेकिन यह एकमात्र सांस्कृतिक प्रदेश है जहाँ प्राय: सभी धर्मावलंबियों के लोग बड़ी संख्या में रहते हैं। इसका सबसे प्रमुख कारण यह था कि यहाँ आने वाले सभी प्रजातियों के लोग स्थायी रूप से अधिवासित हो गए। अत: इस क्षेत्र में न सिर्फ प्रजातीय मिश्रण हुआ वरन् वंशानुगत लक्षण के रूप में सहिष्णुता का विकास हुआ।

इस प्रदेश की संस्कृति पर धर्म से कहीं अधिक वातावरण का प्रदेश है। यह मानसूनी संस्कृति का प्रदेश है। ग्रामीण जीवन कृषि इस प्रदेश की सांस्कृतिक पहचान है।

(4) बौद्ध धर्म सांस्कृतिक प्रदेश :-यह मुख्यत: बौद्ध धर्मावलंबियों का प्रदेश है। यह प्रदेश मंगोलाऽ प्रजाति से अधिवासित है, फलस्वरूप इस प्रदेश के लोगों की जीवनशैली पर मंगोलाऽ प्रजाति की मान्यताओं का प्रभाव देखने को मिलता है।

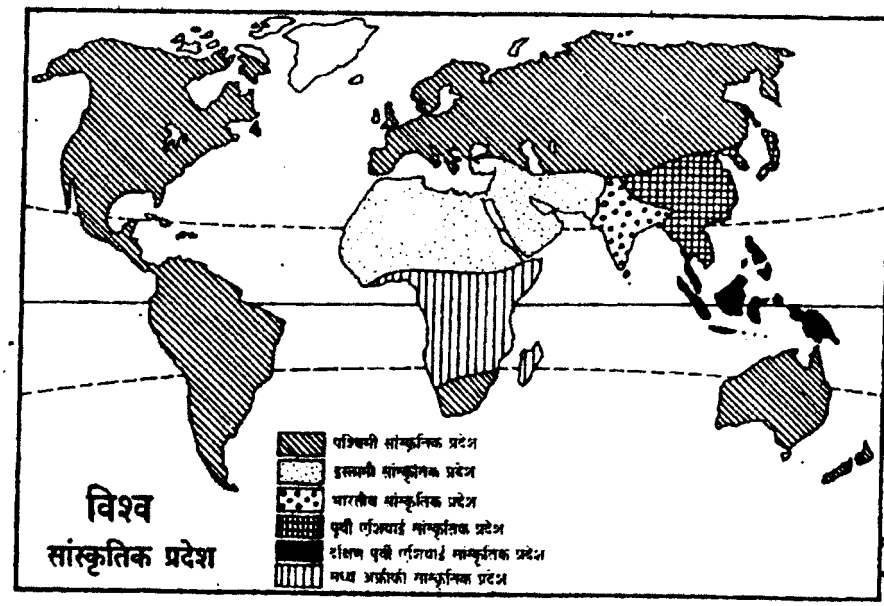

चित्र 4.2 विश्व के सांस्कृतिक प्रदेश

सांस्कृतिक दृष्टि से इस प्रदेशों को दो उप-प्रदेशों में विभाजित किया गया है।

(i) चीन की संस्कृति एवं

(ii) जापान की संस्कृति।

आर्थिक समरूपता, औद्योगीकरण औ उदारीकरण इस संस्कृति प्रदेश की विशेषता है। इसे पूर्वी एशियाई सांस्कृतिक प्रदेश भी कहा जाता है।

लघु सांस्कृतिक प्रदेश

(1) दक्षिण पूर्वी एशियाई सांस्कृतिक प्रदेश :-यह एक संक्रमण सांस्कृतिक प्रदेश है, जो कि औद्योगिक अवस्थिति का परिणाम है। यहाँ भी प्राय: सभी धार्मिक मान्यताओं के लोग रहते हैं। उनमें भी

अंतर आकर्षण एवं सह-अस्तित्व की प्रवृत्ति है। परन्तु इस प्रदेश की बड़ी विशेषता यह है कि सभी धर्मों के लोगों के अंधविश्वास की अलग पहचान है।

मेसो अफ्रीकी सांस्कृतिक प्रदेश :-यह जनजातीय संस्कृति एकाकी सांस्कृतिक प्रदेश है। चूँकि अफ्रीका के अधिकतर क्षेत्रों में इस संस्कृति का प्रभाव है, इसलिए इसे मेसो अफ्रीकी सांस्कृतिक प्रदेश कहा गया है परन्तु वास्तव में इस सांस्कृतिक प्रदेश के अन्तर्गत कनाडा के एस्कीों प्रदेश, साइबेरिया के यूकागीर प्रदेश, आस्ट्रेलिया में ऐबराजीन भारत के अंडमान-निकोबार द्वीप समूह प्रदेश, पश्चिम पूर्वी एशिया में बोर्नियो द्वीप प्रदेश तथा दक्षिण अमेरिका का आमेजन जनजातीय प्रदेश भी आता है।

इस सांस्कृतिक प्रदेश की सबसे बड़ी विशेषता है कि यह एक प्राकृतिक सांस्कृतिक प्रदेश है। इस क्षेत्र में रहने वाले निवासियों पर प्रकृति का अभूतपूर्व प्रभाव है।

4.4 निष्कर्ष (Summing-up)

उपर्युक्त तथ्यों से स्प्ष्ट होता है कि संस्कृति परिमण्डल का तात्पर्य उस प्रदेश से है जिसके अन्तर्गत रहनेवाले लोगों का सांस्कृतिक जीवन एक-दूसरे से अन्तर संबंधित है।

प्राचीन समय में कुछ विशेष क्षेत्रों जैसे नदी घाटी प्रदेशों मं मानवीय संस्कृति को विकसित होने का अवसर प्रदान किया, फलस्वरूप यह क्षेत्र मानव संस्कृति के हृदयस्थल सिन्धु घाटी, दजला फरात घाटी, नील घाटी ह्वांगहो घाटी है। इन क्षेत्रों में ही संस्कृति का उद्‌भव हुआ तथा विश्व के अन्य क्षेत्रों में इन्हीं क्षेत्रों से प्रसार भी हुआ।

विश्व को सांस्कृतिक परिमण्डल में वर्गीकृत करने का प्रयास विभिन्न मानवशास्त्री, इतिहासकार एवं भूगोलवेत्ताओं ने किया। भूगोलवेत्ताओं के बीच विद्वान ब्रोक महोदय के वर्गीकरण को सर्वाधिक मान्यत मिली। इन्होंने बहुचर समरूपता अर्थात धर्म, प्रजातीय गुण, भाषायी वितरण, कार्चिक संरचना, लोक-संस्कृति रहन-सहन, खान-पान की आदत, वेशभूषा, सामाजिक मान्यताओं के आधार पर विश्व को चार प्रमुख एवं दो लघु सांस्कृतिक परिमण्डलों में वर्गीकृत किया है। ईसाई प्रधान सांस्कृतिक प्रदेश, इस्लाम प्रधान सांस्कृतिक प्रदेश, इण्डिक सांस्कृतिक, बौद्ध धधर्म सांस्कृतिक वृहत संस्कृति प्रदेश एवं दक्षिणी पूर्वी एशियाई सांस्कृतिक प्रदेश एवं मेसो अफ्रीकी संस्कृति प्रदेश लघु सांस्कृतिक प्रदेश है।

इन सभी प्रदेशों की अपनी अलग-अलग विशिष्टाएँ हैं, जिनके आधार पर यहाँ विभिन्न संस्कृति का स्वरूप दृष्टिगोचर होता है।

मानव का पृथ्वी तल पर अभ्युदय एवं प्रसार पूर्णत: प्राकृतिक प्रभाव के कारण ही है। इस प्रसार के कारण नये-नये क्षेत्रों में नइ-नई संस्कृतियों का विकास हुआ साथ ही नये परिवेश में समायोजन की प्रक्रिया में मानव का शारीरिक गठन कार्य-क्षमता, रूप-रंग, आर्थिक-सामाजिक व्यवस्था और अन्य क्षेत्रों के सम्पर्क से कला में भारी परिवर्तन लाया । वर्तमान विश्व में आधुनिक संचार एवं तकनीकी का विकास इस भौतिक-सांस्कृतिक परिघटनाओं की ही देन है।

4.5 व्यवहृत प्रश्न (Key Words Used)

सांस्कृतिक परिमण्डल (Cultural Realms) :-

सांस्कृतिक प्रदेश से तात्पर्य उस विस्तृत भू-भाग से है जिसके निवासियों में महत्वपूर्ण गुणों में मौलिक एकता, संकलन, विन्यास एकीकरण समान रूप से पाया जाता है और इन विशेषताओं के कारण सांस्कृतिक परिमण्डल का निर्माण होता है।

सांस्कृतिक हृदयस्थल (Cultural Healths) :-

प्रारंभ में विश्व के कुछ क्षेत्रों में मानव जमघट का बसना आरंभ हुआ, जो मानवीय जीवन के लिए सर्वोतम अनुकूल प्रदेश था। यहाँ जल यातायात सुरक्षा, आखेट, कृषि, भोजन, आवास इत्यादि की सुविधा थी। इन संपूर्ण परिस्थितियों ने मानवीय संस्कति को विकसित होने का अवसर दिया, फलस्वरूप कुछ क्षेत्र मानव संस्कृति के हृदयस्थल बन गये। प्रमुख सांस्कृतिक हृदयस्थल-सिन्धु घाटी, दजला-फरात क्षेत्र, नील घाटी, हांगहों घाटी इत्यादि हैं।

4.6 अभ्यासार्थ प्रश्न (Questions for Exercise)

1. विश्व को विभिन्न सांस्कृतिक प्रदेशों में विभाजित करते हुए व्याख्या कीजिए।
2. विश्व के सांस्कृतिक परिमण्डल की चर्चा कीजिए।

4.7 संदर्भ पुस्तकें (Reference Books)

1. माजिद हुसैन : मानव भूगोल
2. डा० वी० वी० राव एवं श्रीवास्तव - मानव भूगोल
3. बी० एन० सिंह : मानव भूगोल
4. एस० डी० कौशिक : मानव तथा आर्थिक भूगोल
5. जे० एन० दीक्षित : सांस्कृतिक भूगोल
6. गायत्री प्रसाद : सांस्कृतिक भूगोल
7. P. Honge : Human Geography ; Culture connections and landscape.

●●●

पर्वतीय क्षेत्रों में मानवीय अभिक्रिया
(Human Activities in Mountain Environment)

पाठ-संरचना (Lesson Structure)

5.0 उद्देश्य (Objective)

5.1 परिचय (Introduction)

5.2 पर्वतीय परिवेश एवं मानव (Mountain Environment & Man)

5.3 मानवीय अभिक्रिया क स्वरूप (Human Activities Patterns)

5.4 अर्थतन्त्र एवं जीवन शैली (Economic Condition and Life Style)

5.5 निष्कर्ष (Summing up)

5.6 व्यवहृत शब्दावली (Key Words Used)

5.7 अभ्यासार्थ प्रश्न (Questions for Exercise)

5.8 संदर्भ पुस्तकें (Reference Books)

5.0 उद्देश्य (Objective)

इस पाठ का उद्देश्य छात्रों को पर्वतीय क्षेत्रों में मानवीय अभिक्रिया के बारे में बताना है। इस अध्ययन के पश्चात् आप जान सकेंगे।

पर्वतीय परिवेश एवं मानव स्वरूप को

पर्वतीय परिवेश में मानवीय अभिक्रिया को एवं

पर्वतीय परिवेश में अर्थतन्त्र के स्वरूप तथा मानवीय जीवन शैली को।

5.1 परिचय (Introduction)

पर्यावरण के तत्त्व समग्र रूप में मानव की अनुक्रियाओं को प्रभावित करते हैं। मानव अपने तकनीकी उपलब्धि से पर्यावरणीय नियंत्रण को यथासंभव कम करने का प्रयास करता है। मानवीय अनुक्रियाओं के नियमन और नियंत्रण में परिवेश की भूमिका अधिक बलवती होती है।

5.2 पर्वतीय परिवेश एवं मानव (Mountain Environment and Man)

पर्वत उस स्थल को कहते हैं, जो 600 मीटर से अधिक ऊँचा हो जिसका ढ़ाल तीव्र हो, (1° से अधिक) जिसके शिखर नुकीले हो तथा जहाँ समतल धरातल का अभाव हो। पृथ्वी के लगभग क्षेत्रफल

पर पर्वतों का विस्तार है। यहाँ पर पर्वतों का तात्पर्य वैसे पर्वतों से है जो आंशिक तौर पर ही मानव निवास योग्य है, क्योंकि ज्वालामुखी पर्वत भी पर्वत है, परन्तु सुषुप्त या जाग्रत ज्वालामुखी पर्वतीय क्षेत्र कभी भी निवास्थ योग्य नहीं हो सकता है। पर्वतीय पर्यावरण का प्रभाव मानव पर सभी भागों में एक सा नहीं पड़ता। इसका कारण पर्वतीय प्रदेशों में ढ़ाल तथा ऊँचाई संबंधी विशेषताओं का होना है।

प्रमुख विशेषताएँ :-

(1) इन प्रदेशों में समतल भूमि की अत्याधिक न्यूनता होती है, अत: कृषि कार्यों को करना मुश्किल हो जाता है।

(2) पर्वतों की भूरचना प्राय: जटिल होती है, जिससे आवागमन के मार्ग को बनाने में कठिनाई होती है।

(3) पर्वतीय क्षेत्रों के आर्थिक संसाधनों के वितरण में असमानता पाई जाती है, फलस्वरूप इनका विदोहन कठिन होता है।

(4) शीतकाल में पर्वतीय क्षेत्रों की जलवायु अत्यधिक प्रतिकूल हो जाती है, जहाँ आर्थिक एवं अन्य क्रियाएँ करना कठिन हो जाता है।

(5) पर्वतों के धरातल में भी असमानता पाई जाती है, अत: मानव पर्वतीय क्षेत्रों में पर्वतीय ढ़ालों का ही उपयोग अधिक करता है। अधिक ऊँचे भागों में तो बर्फ ही जमे रहते हैं।

पर्व मानव जीवन को अनेक रूपों में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं, जैसा कि निम्न तथ्यों से स्पष्ट हो जायेगा–

(1) पर्वतों का जलवायु पर प्रभाव:-किसी स्थान की जलवायु के अध्ययन में पर्वतों को प्रमुख बाधा के रूप में माना जाता है। पर्वतों से ही टकराकर जलभरी वर्षा की हवाएँ वृद्धि करती है और उनके ही कारण देश के दूसरी ओर का भाग दृष्टि छाया क्षेत्र बनकर सूखा रह जाता है।

(2) पर्वतों और कृषि :- पर्वतीय भूमि कृषि के लिए उपयुक्त नहीं होती है। पर्वतों से मिट्टी कटकर घर्षण एवं जलप्रवाह के कारण बह जाती है। कभी वर्षा का आधिक्य और कभी उसका अभाव दोनों ही कृषि कार्य को प्रभावित करते हैं।

(3) पर्वत एवं प्राकृतिक वनस्पति :- पर्वतों का प्राकृतिक वनस्पति से गहरा संबंध होता है। पर्वतीय क्षेत्र प्राकृतिक वनस्पति के दृष्टिकोण से धनी माने जाते हैं। पर्वतों पर मैदानों की अपेक्षा अधिक वर्षा होती है जिससे वनों के विकास में बहुत सहायता मिलती है।

(4) पर्वत एवं यातायात :- विषम धरातलीय क्षेत्र होने के कारण पर्वतीय प्रदेशों में परिवर्तन मार्ग बनाने में कठिनाई होती है। पर्वतीय क्षेत्र परिवहन में बाधक होते हैं।

(5) पर्वत एवं सुरक्षा :- पर्वतीय क्षेत्र उत्तम प्राकृतिक प्रहरी के रूप में कार्य करती हैं। भारत के उत्तर-पूर्वी तथा पश्चिमी सीमा पर हिमालय पर्वत के कारण बाहरी आक्रमण नहीं हो पाते हैं। नेपाल पर्वतमालाओं के बीच स्थित होने के कारण ही अपनी स्वतन्त्रता को सुरक्षित रख पाया है। प्राकृतिक बाधाओं से भी ये पर्वत सुरक्षा प्रदान करते हैं। जैसे-हिमालय पर्वत के कारण ही भारत में उत्तर की ओर से ठंडी एवं शुष्क पवनें नहीं पहुँच पाती हैं।

(6) पर्वत एवं मानवीय आकर्षण :- पर्वतामालाओं की हिममण्डित शिखाएँ, सुरम्य शांत सौम्य वातावरण प्रारंभ से ही मानव के आकर्षण का केन्द्र रहा है। स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से इस क्षेत्र की वातावरण को बहुत ही अनुकूल माना जाता है। उदाहरण के लिए भारत के प्रमु पर्वतीय स्थल, शिमला, नैनीताल, मंसूरी, श्रीनगर आदि स्थान प्रारंभ से ही मनोरंजन एवं मानवीय आकर्षण के पर्यटक स्थल हैं। पर्यटन उद्योग, फिल्म उद्योग, बागवानी स्वास्थ्य केन्द्र और शिक्षा संस्थाओं के लिए यहाँ अनुकूल वातावरण पाया जाता है। स्पष्ट है कि पर्वतीय परिवेश का गहरा प्रभाव मानव जीवन पर देखा जा सकता है।

5.3 मानवीय अनुक्रियाओं का स्वरूप (Pattern of Human Activities)

पर्वतीय परिवेश की सीमाएं मानवीय संख्या और अनुक्रियाओं के स्वरूप को निर्धारित करती हैं। फलतः आधारभूत आवश्यकताओं जैसे भोजन, वस्त्र, गृह, उपकरण एवं परिवहन पर इसका स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है।

पर्वतीय क्षेत्र के कठिन भौतिक परिवेश में प्रधानतः ऐसे लोग निवासित पाये जाते हैं, जो अपनी सीमित आवश्यकता और कम विकसित अर्थतन्त्र में ही रह सकते हैं। पर्वतों में मानव के क्रियाकलाप इस वातावरण के अनुसार ही नियंत्रित एवं निश्चित होते हैं। पर्वतीय वातावरण में मानव को प्रकृति के साथ प्रत्यक्ष समायोजन करने के साथ-साथ जैविक अनुकूलन भी करना पड़ता है।

पर्वतीय क्षेत्र में मानव बसाव के मुख्यतः दो रूप देखने को मिलते हैं-स्थाई एवं अस्थाई बसाव। स्थायी बसाव प्रधानतः उन क्षेत्रों में पाया जाता है जहाँ जीविका के साधन कृषि, उत्खनन, गृह उद्योग, व्यापार या सेवा कार्य है। अस्थाई बसाव उन आदिवासियों का होता है जो मौसमी परिवर्तन के साथ-साथ पशुओं के साथ-साथ स्थानान्तरण करते रहते हैं।

5.4 अर्थतन्त्र एवं जीवन शैली (Economic Condition & Life Style)

पर्वतों के कठोर भौतिक परिवेश में सीमित अर्थतन्त्र ही विकसित हो पाते हैं। जिसमें प्रधानतः-आखेटण, पशुपालन सीमित कृषि, गृह उद्योग, लघु स्तरीय व्यापार वन पर आधारित उद्योग एवं पर्यटन उद्योग शामिल हैं।

पर्वतों में पूर्व काल से ही पहाड़ी जातियों में आखेटण एवं पशुपालन एक मुख्य पेशा रहा है। यहाँ कृषि का विकास सीमित भूमि पर ही संभव हो पाता है। विश्व के अधिकांश पर्वतीय भागों में जहाँ जलवायु कृषि के अनुकूल मिलती है, ढालों पर सीढ़ीनुमा खेती की जाती है। सिंचाई की सुविधा न हो पाने के कारण केवल वर्षा आधारित कृषि की प्रधानता पाई जाती है। फसलों के अतिरिक्त फलों की खेती एवं बागवानी भी की जाती है। इन प्रदेशों में फल, जड़ी बूटी फूल एवं चाय की बागवानी अधिक प्रचलित है।

वन पर आधारित उद्योग :-प्रकृति ने पर्वतों में वन उद्योग के लिए सर्वोतम वातावरण प्रदान किया है। पर्वतों में ऊँचाई के अनुसार विभिन्न प्रकार के वन मिलते हैं। निचले भागों में उष्ण कटिबंधीय उनसे ऊपर उपोष्ण तथा उससे भी ऊपर समशीतोष्ण वन पाए जाते हैं। वनों की अधिकता के कारण यहाँ लकड़ी काटने का धंधा अत्यन्त सामान्य एवं लोकप्रिय होता है। परन्तु वनों से काटी गयी लकड़ियों का परिवहन अत्यन्त मुश्किल हो जाता है। नार्वे, स्वीडन में लकड़ियों के लठठों को बर्फ पर फिसलाकर नदियों तक परिवहन हेतु पहुँचाया जाता है।

पर्वतीय क्षेत्रों से प्राप्त वनों की लकड़ियाँ कई उद्योगों में प्रयुक्त की जाती है। इस क्षेत्र के लोग अपने मकानों की दीवारों तथा छते प्राय: लकड़ी के ही बनाते हैं।

वर्तमान समय में, पर्वतीय क्षेत्रों में वनों की अंधाधुंध कटाई से पर्यावरण एवं मिट्टी कटाव की समस्या बढ़ती जा रही है।

खनन उद्योग :-पर्वतीय चट्टानों में बहुमूल्य खनिज सम्पदा भी पायी जाती है। प्राचीन आग्नेय व रूपान्तरित शैल वाले चट्टानों में धात्विक खनिज तथा परतदार चट्टानों में खनिज तेल एवं कोयला के भंडार मिलते हैं। परन्तु पर्वतों में खनन कार्य अत्यन्त दुष्कर होता है। अधिक ऊँचाई पर परिवहन, भारी मशीनों को स्थापित करने की समस्या एवं वायुदाब संबंधी समस्या होती है। इन समस्याओं के बावजूद भी पर्वतों में खनन जारी है।

छोटे एवं हल्के निर्माण उद्योग:-पर्वतीय वातावरण में छोटे एवं हल्के निर्माण उद्योग विकसित होते हैं, जिनका वजन कम व मूल्य ज्यादा होता है। ये उद्योग हैं-

- पशुपालन पर आधारित ऊन एवं ऊनी वस्त्र उद्योग
- डेयरी उद्योग
- नकल रेशम, प्लास्टिक इलेक्ट्रानिक्स, औषधियाँ इत्यादि के उद्योग

पर्यटक उद्योग :- पर्वतों की हिममंडित शिखर झरने घाटियाँ, झीले एवं स्वास्थ्यवर्द्धक जलवायु पर्यटकों को सहज अपनी ओर आकर्षित कर लेती हैं। पर्वतीय क्षेत्रों में पर्यटन अब एक उद्योग के रूप में विकसित हो रहा है।

ऐसे परिवेश में निवासित लोगों की संख्या कम होती है। यहाँ के लोग अति सहज जीवन शैली के अभ्यस्त होते हैं। शिक्षा, सम्पर्क तथा न्यूनतम आय के कारण ये आधुनिक समाज से अलग हो जाते हैं।

सामान्य भोजन सामान्य पोशाक और सामान्य घरों में रहने वाले पर्वतीय निवासी अत्यधिक मेहनती, सच्चे, सहिष्णु और उदार होते हैं। धर्म एवं मर्यादा के प्रति इनकी विचारधारा परम्परावादी होती है। पर्वतीय परिवेश की जटिलता से यहाँ के लोग परिवेश से पूर्णरूपेण समायोजन कर प्रकृतिवादी बन गए हैं। सादा जीवन उच्च विचार इनके जीवन-दर्शन का आधार है।

5.5 निष्कर्ष (Summing-up)

उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि पर्वतीय वातावरण का प्रभाव पर्वतीय क्षेत्रों में रहने वाले मानव जीवन के प्रत्येक क्रियाकलाप पर पड़ता है। सदैव कठोर एवं ठंडे वातावरण में रहने के कारण पर्वतीय लोग निर्भीक, बलवान एवं साहसी होते हैं। इन लोगों को अपनी संस्कृति एवं वेशभूषा से बहुत लगाव होता है। पर्वतीय लोगों का सम्पर्क बाहरी लोगों से न होने के कारण इनका अपेक्षित विकास नहीं हो पाया है।

पर्वतीय क्षेत्रों के प्राकृतिक सौन्दर्य, स्वास्थयवर्द्धक जलवायु वर्तमान समय में पर्यटक उद्योग को बढ़ावा दे रही है। पर्यटन उद्योग, फिल्म उद्योग, बागवानी, स्वास्थ्य केन्द्र एवं शिक्षा संस्थाओं के लिए यहाँ अनुकूल वातावरण पाया जाता है। फलत: भारत में मंसूरी, दार्जिलिंग, शिमला, नैनीताल, श्रीनगर, अल्मोड़ा, रानीखेत, पिथौरागढ़ जैसे प्रसिद्ध पर्वतीय नगरीय अधिवास पाए जाते हैं।

वर्तमान समय में विश्व के कई क्षेत्रों में पर्वतीय संसाधनों से अत्यधिक छेड़छाड़ वहाँ की पारिस्थितिकी को संकट में ला दी है। भूस्खलन, हिमस्खलन की घटनाएँ घटित हो रही है। इन समस्याओं की ओर भूगोलविदों, पर्यावरणविदों व समाजशास्त्रियों का ध्यान केन्द्रित हुआ है जो समाधान के प्रयत्नों में जुटे हैं।

5.6 व्यवहृत शब्दावली (Key Words Used)

पर्वत (Mountain) :-

पर्वत उस स्थल को कहते हैं जो 600 मीटर से अधिक ऊँचा हो जिसका ढ़ाल तीव्र हो, (10° से अधिक) जिसके लिए शिखर नुकीले हो तथा जहाँ समतल धरातल का अभाव हो।

सुषुप्त ज्वालामुखी (Dormat Volcano) :-

कुछ ज्वालामुखी उद्‌गार के पश्चात शांत पड़ जाते हैं तथा उनसे पुनः उद्‌गार के लक्षण नहीं दिखते हैं, पर अचानक उनसे भयंकर या शान्त उद्‌भेदन हो जाता है। उसे 'सुषुप्त ज्वालामुखी' कहते हैं।

जाग्रत ज्वालामुखी (Active Volcano) :-

जिस ज्वालामुखी से लावा, गैस तथा विखण्डित पदार्थ सदैव निकलता रहता है उन्हें 'जाग्रत' या 'सक्रिय ज्वालामुखी' कहते हैं।

5.7 अभ्यासार्थ प्रश्न (Questions for Exercise)

1. पर्वतीय क्षेत्रों के निवासियों के जीवन-शैली एवं अर्थतंत्र पर भौतिक वातावरण के प्रभावों की विवेचना करें।
2. पर्वतीय क्षेत्रों में मानवीय अभिक्रियाओं का वर्णन करें।

5.8 संदर्भ पुस्तकें (Reference Books)

1. माजिद हुसैन : मानव भूगोल
2. डा० श्रीवास्तव एवं राव - मानव भूगोल
3. एस० डी० कौशिक - मानव एवं आर्थिक भूगोल
4. बी० एन० सिंह : मानव भूगोल
5. L.R. Singh : Fundamentals of Human geography
6. Fellmen : Human Geography

●●●